SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

लहकते रिश्तो में नासिरा का पारिजात

सरिता, शोध छात्रा, हिंदी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सरिता, शोध छात्रा, हिंदी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,
उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 25/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 30/09/2020
Plagiarism : 00% on 26/09/2020

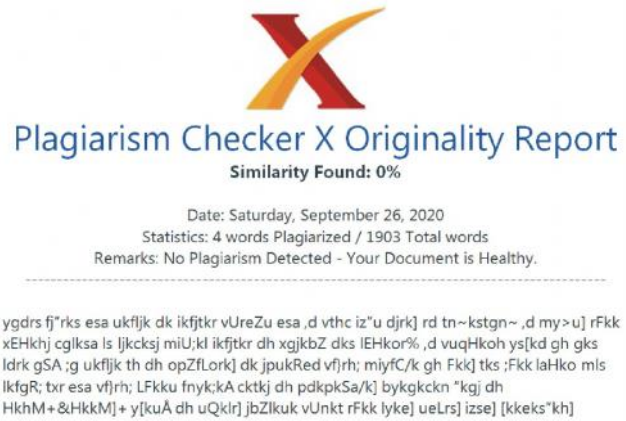

शोध सार

अन्तर्मन में एक अजीब प्रश्न करता, तक जद्जोजहद् एक उलझन, तथा गम्भीर बहसों से सराबोर उपन्यास पारिजात की गहराई को सम्भवतः एक अनुभवी लेखक ही हो सकता है। यह नासिरा जी की वर्चस्विता, का रचनात्मक अद्वितीय उपलब्धि ही था, जो यथा संभव उसे साहित्य जगत में अद्वितीय स्थान दिलाया। बाजार की चकाचौंध, इलाहाबाद शहर की भीड़–भाड़, लखनऊ की नफासत, रईसाना अन्दाज तथा सलाम, नमस्ते, प्रेम, खामोशी, ग्रामीण रीतिरिवाओं में रिश्तो की अजीब गरमाहट, उन्ही सब के बीच अमराई के बगीचों की खूबसूरती तथा आमों की महक, कोकिल की मीठी सुरीली धुन के बीच पारिजात की कल्पना और उस कल्पना को हकीकत का सुन्दर रुप देने के लिए उसके पास तक पहुँचना। इसी पवित्र अभिव्यक्ति के बीच नासिरा जी के प्रखर मेहनत और प्रतिभा का परिणाम सभी को आश्चर्य में डाल देता है।

मुख्य शब्द

मानसिक भावना, अभिव्यक्ति, पारिजात।

पानी पे चौकियाँ सितम आरा बिठाते है,
दरिया के घाट बरछियों से रोके जाते है।.....1

नासिरा जी ने बहुत से उपन्यास और कहानियाँ लिखी, कही शाल्मली के रूप मे स्त्री के सहन करने की स्थिति, या सदियों से स्त्री के रूप मे मान्यताओं का बोझ ढ़ोती 'महरूख' (ठीकरे की मंगनी) के रूप में, या अपनी बेवसी से बोझिल 'निजाम' (जिन्दा मुहावरे) के रूप मे या फिर जीवन का आयाम, पीड़ा का सच (जीरो रोड़) इस्लामिक देश मे अपनों का ही कल्ले आम दिखाता (बहिश्ते जहरा)। इस तरह उनके प्रचुर साहित्य में अनेको उपन्यास और कहानियाँ सिलसिलेवार मानव सभ्यता, संस्कृति और विनाश लीला का जीवन्त दस्तावेज बन कर सामने आया है।

नासिर जी ने अपने उपन्यासों में शोषण की भयावह स्थिति, घुटन, संत्रास, मानवीय मूल्य, स्वतन्त्र प्रेम की पराकष्ठा तथा समाज के नैतिक मूल्य किस स्तर पर पहुँच गये है, जो मनुष्य को निष्कामता और खिन्नता की ओर उन्मुख करता है, को प्रदर्शित करता है। कभी–कभी उन्ही रिश्तो में पारिजात की महक आती है, जो जीवन को प्रेम से सिक्त कर जीवन को समृद्ध करता है।

समकालीन रचनाकारों में अपनी सशक्त पहचान कायम करती नासिरा शर्मा जीवन में होने वाली विसंगतियों को पहचानती है, तथा उन अनुभवो को स्वयं भी जीती है, और इस अनुभव प्रक्रिया से गुजर कर वह नयी सम्भावनायें, नये रास्ते तलाशती है।

इस स्वतन्त्र लेखिका को जब उनके उपन्यास पारिजात पर 2016 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ, तो लगा यह उनके जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। यह बात समझने की जरूरत नहीं रह जाती कि नासिरा जी में उच्चकोटि का साहित्यकार प्रतिफलित हो रहा है। नासिरा जी का अदम्य साहस, गहरी तन्मयता जो इस बात को आश्चर्य में डाल देती है कि लेखिका की सोच कितनी अतल गहराई में समाहित है। वह शब्दों में ही नहीं अपनी आँखो में भी पारिजात को बसाना चाहती है। वह चाह रखती है कि वह अपनी समस्त कोमल संवेदनाओं सहित उनके दामन में समा जायें। जिससे न केवल नासिरा जी का जीवन बल्कि, उन सबका जो उनके अपनी भावनाओं में प्रतिबद्ध है। वह उस पुष्प की प्राप्ति हेतु उसके समीप पहुँचती है, और पहुँचता है उनके आशाओं का गीत। घाघरा की अविरल धारा से पारिजात की कामना ही भावी जीवन को दोष–मुक्त करेगा और यह जीवन परिपूर्ण हो कर अपराजेय कामना से भरा उल्लास के गीत गायेगा।

पारिजात के रुप में नासिरा जी ने एक हरे–भरे जीवन की कामना की है यह केवल एक पुष्प ही नहीं, नासिरा जी के जीवन का, उनकी अभिलाषाओं और आकांक्षाओं का उत्सर्ग भी है। शायद इसीलिए कामनापूर्ति हेतु पारिजात के लिए आँचल फैलाती है और इस आँचल में असीम सम्भावनाओं से भरा विह्वल, समर्पित मन तथा सब कुछ आलोकमय होने की परम् इच्छा प्राप्त करना चाहती है।

अब उनका मन ही नहीं पारिजात के खिले सौन्दर्य के साथ स्पन्दित हो साहित्य की खुशबू बन वातावरण में फैल जाती है। गंगा–जमुनी संस्कृति से ओत–प्रोत यह उपन्यास दो समाज ही नहीं, दो सभ्यताओं का जीता–जागता प्रतीक है। मानव ह्रदय में जागरित अतुलनीय एहसास जो सदियों तक प्रतिष्ठित रहेंगे। इंसान आज नैतिक, सामाजिक जीवन में कितना खोखला, कितना दुर्बल और मर्यादाहीन हो चुका है। रिश्ते निभाने तो वह लगभग भूलता जा रहा है, अपनी ही जड़ो को काटकर पुरखों की विरासत को खोता जा रहा है। वह क्षण–भंगुर की स्थिति को वास्तविक जीवन मानकर कभी खुश हो जाता और कभी दुख और ग्लानि से भर जाता है। रोहन अपनी आत्मा का अन्तर्मन्थन कर रहा है। वह शहर से गाँव तक की माटी से परिचित होना चाहता है। इलाहाबाद की गंगा–जमुनी लोकप्रिय संस्कृति राष्ट्र की एकता के संदेश के साथ रुही और रोहन की संवेदनाए भी सामाजिक रुप से प्रत्यक्षदर्शी है।

रोहन की पत्नी 'एलेसन' बच्चे को लेकर की गायब हो जाती है। छोड़ जाती है रोहन के लिए कई–कई वीरान राते। रोहन अपने बच्चे के लिए दर–दर भटकता है। रोता है, अपने किये पर पश्चाताप करता है। फिर भी वह गिरता नहीं, सम्हलता है, वह रुही के टूटे ह्रदय को जोड़ने का प्रयास करता है। उसे लगता है मेरे दुःख का पैमाना अन्ततः रुही के दुःख से बड़ा नहीं। उसकी नसों में खून की रफ्तार और तेज हो जाती है। रोहन में नैतिकता का आत्म विस्तार है। वह पारिजात की तलाश में लगातार प्रयासरत है, क्योंकि उसे पता है या उसका आत्मविश्वास है, कि एक दिन टेशू (बेटा) अवश्य आयेगा, जीवन की इस रिक्तता को भरने।

'' रोहन को महसूस हुआ कि जब तक शमां जलती रहती है। तब तक मोम पिघलती रहती है और एक वक्त ऐसा आता है जब, मोम सारा पिघलकर अपनी तरलता में लौ को बुझाकर जमने लगती है। धीरे–धीरे उसकी नरमी और गरमी सख्त हो जाती है।''.....2

ह्रदय में असीम वेग हो तो रिश्तों की गरमाहट बनी रहती है। जीवन का यथार्थ, जीवन का संघर्ष बन जाता है। ह्रदय की अनुभूतियाँ मनुष्य की वास्तविक पहचान बताती है, और वह जीना सीख लेता है। रोहन ने अपना सब

कुछ खोया, और रुही ने भी परन्तु क्या प्रो0 प्रह्लाद ने नहीं खोया या, प्रभा, नुसरत जहाँ, जुल्फिकार अली और फिरदौस जहाँ ने। सभी ने अपने–अपने हिस्से की खुशियों का एक बड़ा हिस्सा खो दिया है। फिर भी अभी ऐसा कुछ है जो चेतन है, स्फूर्त है, उत्साहित है। 'नदी के द्वीप' 'उपन्यास' में रेखा कहती है :

''जीवन के सारे महत्वपूर्ण निर्णय व्यक्ति अकेले करता है, सारे दर्द अकेले भोगता है– और तो और, प्यार के चरम, आत्म–समर्पण का सबसे बड़ा दर्द भी..... मिलने में जो विरह का परम रस होता है।'' 3

यादें तो उन पुष्पों की भाँति, रात्रि के खुले आसमां में छोट–छोटे पुंजो की तरह लटके रहते है। परन्तु वह किसी के हाथ मे नही आते, न ही उनकी परिधि हमारे आँकडो से मेल खाती है। मनुष्य को अपना दुःख, अपनी वेदना तब तक परिमित जान पड़ती है जब तक वह दूसरो के घावो पर एहसासो का लेप नही चढ़ाता।

''सूरज की नारंगी आभा सीधे झूले पर पड़ रही थी। उस रंग ने रूही के चेहरे को बहुत खूबसूरत बना दिया था। आंसुओ से धुला चेहरा बहुत पाकीजा था। रोहन का दिल रूही के लिए मोहब्बत से लबरेज हो उठा जो इस वक्त महसूस कर रहा था, उसे खुद समझ में नही आ रहा था, इसको अकीदत का नाम दे या फिर ममता का।''....4

मन को बार–बार सम्बोधन देती एक बात कि क्या प्रेम, ममता और अपनापन इंसानो को जोड़ती है, जोड़ती है वो दो संस्कृतियो को, दो किरदारो और समाज के बहुत सारे सम्बन्धो को। यद्यपि प्रभा जी को इस बात से कोई समस्या नही थी कि उनका बेटा रोहन एक विदेशी लड़की से ब्याह कर रहा । वो तो ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनका बच्चा खुश रहे। परन्तु उनके मन मे जो शंकाए थी वो एक दिन सच बन कर सामने आई।

'' दोनो की तबियत मे बहुत फर्क है। एक अंदर यात्रा करता है, दूसरा बाहर ।
दो कल्चर का यह गठबन्धन जाने क्यो मुझे शंकित करता है।''..... 5

अनुभव से मन इस बात से कितना संतुष्ट हो सकता था। नासिरा जी ने अपने अनुभव दिये।

रोहन को पता है एलेसन ने उसे धोखा दिया है, वह उसके पारिजात को कभी नही लौटायेगी फिर भी वह अपने को नही समझा पाता। इस भटकाव मे बस रूही ही है जो उसके दुःख की भागीदार है, वह भी अपनी तकलीफों के साथ खड़ी है। रोहन अपने अस्तित्व को बचाये रखना चाहता है और उनके भी, जो उसके सुख–दुख के प्रत्यक्ष द्रष्टा है, सहयोगी है। यद्यपि वह एक समृद्ध जीवन की कल्पना भी नही करता बस वह खड़ा रहना चाहता है, उस सत्य के साथ जो उसे अप्रत्याशित रूप से मिला है। 'टेसू' की याद आते ही अवस उदासी उसके जेहन मे अन्दर तक समा जाती है, परन्तु रोहन विजयी होगा उस अन्धकार से जो उसके आस–पास गहन रूप मे विद्यमान है।

यहाँ लेखिका के अपने अनुभव है, गम्भीर प्रवाह, निर्विकार भाव से अनुभूतियो से लिप्त है। सम्पूर्ण अनुभव नासिरा जी की स्वयं की अनुभूतियाँ प्रतीत होती है। पारिजात एक पुष्प ही नही वह लेखिका के आत्मचिन्तन का अनन्त प्रसार है। और इसी चिन्तन को उन्होने अपने उपन्यास में बिखेरा। कभी रोहन मे, कभी रूही मे कभी प्रो0 प्रह्लाह और प्रभा में, कभी नुसरत बेगम की काँपती आवाज में, क्यों की नासिरा जी की नजरों मे प्रेम केवल सिक्त ही नही करता वरन् समृद्ध भी करता है। वह हर उस अनुभव प्रक्रिया से गुजरता है, जो हमारे आस–पास है, फिर वो चाहे अमराई की सोंधी महक या फिर माटी से उड़ती बूंदो की सुगन्ध। ये एहसास ही मनुष्य को खंड़ित होने से बचाते है।

कथावस्तु इतना सधा हुआ कि वर्तमान की खोज में अतीत समक्ष रूप में सामने है। वेदना की गहरी भावभूमि में उलझा हर पात्र नई फसल के इंतजार में हैं। एक साथ इतने सारे रिश्तो की आपसी पकड़ उपन्यास को मजबूती से बांधे हैं। रोहन दत्त हुसैनी ब्राहमण है, फिर भी काजिम और रूही उसके गहरे मित्र हैं। कहाँ मिलेगा पारिजात और उसकी खोज में रोहन को अभी कितना भटकना पड़ेगा। उपन्यास अपनी समस्त कथा को एक सूत्र मे बांधने के लिए भावाभिव्यक्ति का सूक्ष्म अवलोकन हो। ऐसा लगता है, पारिजात एक स्वप्न है, जिसे पाने की कामना नासिरा जी का उद्देश्य बन गया है। यथार्थ की धरती पर पाँव रखते हुये हर उस पथरीले रास्तो को पार करना चाहती है। अपनी गहरी नजरों से आँकती उस हद की तलाश करती है, जो स्वयं मे आत्म विश्लेषण है। आत्म विश्वास दर्द को कम करता है। यद्यपि उदासी और अवसाद के बीच व्यक्ति को यथार्थ से परिचित होना अनिवार्य है, तथा अपनी

जटिल परिस्थितियों से स्वयं को समझ किसी निष्कर्ष पर पहुँचना उतना ही आवश्यक। संतापकारी, दुखद स्थिति हमें आगे बढ़ने से रोकती है, फिर भी आगे जाने के लिए कदम स्वयं को ही बढ़ाना पड़ता है। रोहन बेगुनाह है, फिर भी सजा याफ्ता है। दोषी तो 'एलेसन' है पर वह मुक्त है। यहाँ नासिरा जी स्त्री का पक्ष नही लेती बल्कि उसे दोषी सिद्व करती है। लेखिका अपने कर्तव्य पथ पर अडिग है, हर जगह पुरूष दोषी नहीं है।

''औरतो पर पिछली कई शताब्दियो से इतने जुल्म हुये है कि लोग बिना सच जाने भी औरत की शिकायत को सही समझ लेते है।'' 6

नासिरा जी की शुभ आकांक्षाओ का पारिजात उनके दामन मे गिरा कि नहीं । किन्तु रोहन का पारिजात तो अभी भी उसकी उम्मीदो से दूर है। आँख बंद करके आत्मसात करता रोहन अभी भी उसकी तलाश में है।

'' तुम मेरी आँखो मे खिलते पारिजात हो।
धीरे–धीरे पंखुड़ी खोलते मेरे अंश के वंशज। 7

यहाँ पारिजात की शुभांकाक्षा लेखिका को निरन्तर ऊर्जावान बनाता है उनका अनुभव विस्तार प्रेम का विस्तार पाते है। पाते है रोहन के रूप मे प्रभात की किरण बन नयी उम्मीदो के स्वागत में।

'' रोहन ने बेसाख्तगी से रूही को अपने सीने से लगाया और वालेहाना अंदाज से कहा– सब कुछ इतना ही आसान था रूह .... इतना ही आसान।'' 8

निष्कर्ष

कहने का तात्पर्य है कि की मार्मिक प्रसंगों सहित मोहन राकेश का यह नाटक कल्पना और साहित्यिक परिस्थितियों का सम्मिश्रण है। नाटक यह सोचने पर विवश करता है की समस्त व्यवहारिकता के पश्चात् भारतीय नारी विषम परिस्थितियों में भी अपने भावनाओं को पूर्णता दे सकती है। यहां लेखक समाज में व्यक्त मनुष्य की मानसिक भावना उसके स्वभाव का अनुसरण किया है। नाटक में प्राकृतिक दृश्यों ने अपने नाम के अनुरूप पाठकों को बांधे रखा है। मल्लिका गंभीरता और साहस के साथ परिस्थितियों का सामना करती है, और अपने प्रेम का अनुसरण करते हुए कालिदास की प्रतीक्षा करती है। प्रेम में पूर्ण समर्पित होकर भी अपना स्नेह और प्रेम बनाए रखती है, परंतु मानव समाज की कुछ अपनी आवश्यकताएं हैं, जिसकी पूर्ति भावनाओं में ही रह कर पूरी नहीं होती। कालिदास का व्यक्तित्व भ्रम उत्पन्न करता है, कि वास्तव में उसे मल्लिका से उतना ही प्रेम था या नहीं। यही समाज दो प्रकार से जीने पर मजबूर करता है, कभी वह निंदा की जगह प्रशंसा और प्रशंसा की जगह निंदा का पात्र बना देता है। लेखक उस चरम लक्ष्य की प्राप्ति करता है जो एक स्वार्थी समाज की मनोदशा प्रस्तुत करे। यहां आषाढ़ के बादल अपनी ही धुन में हर परिस्थिति में एक से रहते हैं, चाहे वह दुख हो चाहे सुख। समस्त उतार–चढ़ाव के बीच नाटक पाठकों पर एक गंभीर प्रभाव छोड़ देता है प्राचीन काल से लेकर आज तक स्त्री अपने पवित्रता अपने नियमों से बंधी हुई है। समाज में उसे कभी आदर, कभी तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। इस बात मैं तनिक भी संदेह नहीं की भौतिक सुख–साधन मनुष्य के जीने के लिए अति आवश्यक है। फिर भी मैं यह कहना चाहती हूं कि पुरुष दृष्टिकोण आज भी और कल भी नारी के लिए एक समान भाव से प्रस्तुत और दृष्टव्य है।

सन्दर्भ सूची

1. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 78।*
2. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 248।*
3. *अज्ञेय – नदी के द्वीप, मयूर पेपर वैक्स (नोएडा), पृ0सं0 286।*
4. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 252।*
5. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 30।*
6. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 303।*
7. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 296।*
8. *शर्मा, नासिरा, पारिजात, किताबघर, नई दिल्ली, पृ0 सं0 504।*

****